❍ 02 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗हर आत्मा के प्रति सदैव शुभ भावना, शुभ कामना रखी ?∗

➢➢ ∗नयी दुनिया से बुधी योग जुड़ा रहा ?∗

➢➢ ∗मनसा सेवा और वाचा सेवा का बैलेंस रखा ?∗

➢➢ ∗स्वयं को सदैव मधुबन निवासी समझा ?∗

____

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ अभ्यास करो - देह और देह के देश को भूल अशरीरी ∗परमधाम निवासी बन जाओ, फिर परमधाम निवासी से अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाओ, फिर सेवा के प्रति आवाज में आओ, सेवा करते हुए भी अपने स्वरूप की स्मृति में रहो, अपनी बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ एक सेकेण्ड से भी कम समय में लगा लो तब पास विद आनर बनेंगे।∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं हर कदम में चढ़ती कला का अनुभव करने वाली विशेष आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा चढ़ती कला में जा रहे हो? *हर कदम में चढ़ती कला के अनुभवी। संकल्प, बोल, कर्म सम्पर्क और सम्बन्ध सबमें सदा चढ़ती कला। क्योंकि समय ही है चढ़ती कला का और कोई भी युग चढ़ती कला का नहीं है।*

〰✧ *संगमयुग ही चढ़ती कला का युग है, तो जैसा समय वैसा ही अनुभव होना चाहिए। जो सेकण्ड बीता उसके आगे का सेकण्ड आया, तो चढ़ती कला।*

〰✧ ऐसे नहीं दो मास पहले जैसे थे वैसे ही अभी हो। हर समय परिवर्तन। लेकिन परिवर्तन भी चढ़ती कला का। *किसी भी बात में रुकने वाले नहीं। चढ़ती कला वाले रुकते नहीं हैं, वे सदा औरों को भी चढ़ती कला में ले जाते हैं।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

₊˚ˑ ••☆••✧˚ˑ ••☆••✧˚ˑ ••☆••✧˚ˑ

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

₊˚ˑ ••☆••✧˚ˑ ••☆••✧˚ˑ ••☆••✧˚ˑ

〰✧ तो कर्मातीत बनना है ना? बापदादा भी कहते हैं आप को ही बनना है। और कोई नहीं आयेंगे, आप ही हो। आपको ही साथ में ले जायेंगे लेकिन कर्मातीत को ले जायेंगे ना। *साथ चलेंगे या पीछे-पीछे आयेंगे? (साथ चलेगे)*

〰✧ यह तो बहुत अच्छा बोला। साथ चलेंगे, हिसाब चुक्त करेंगे? इसमें हाँ जी नहीं बोला। कर्मातीत बनके साथ चलेंगे ना। *साथ चलना अर्थात साथी बनकर चलना।* जोडी तो अच्छी चाहिए या लम्बी और छोटी? समान चाहिए ना!

〰✧ तो कर्मातीत बनना ही है। तो क्या करेंगे? अभी अपना राज्य अच्छी तरह से सम्भालो। रोज अपनी दरबार लगाओ। राज्य अधिकारी तो हो ना! तो *अपनी दरबार लगाओ, कर्मचारियों से हालचाल पूछो।* चेक करो ऑर्डर में हैं?

₊˚ˑ ••☆••✧˚ˑ ••☆••✧˚ˑ ••☆••✧˚ˑ

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

₊˚ˑ ••☆••✧˚ˑ ••☆••✧˚ˑ ••☆••✧˚ˑ

₊˚ˑ ••☆••✧˚ˑ ••☆••✧˚ˑ ••☆••✧˚ˑ

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *फ़रिश्ते अर्थात् अपने फ्युचर द्वारा अन्य आत्माओं के फ्युचर बनाने वाले सदा अपना फ्युचर सामने रहता है?* जितना निमित्त बनी हुई आत्मायें अपने फ्युचर को सदा सामने रखेंगी उतना अन्य आत्माओं को भी अपना फ्युचर बनाने की प्रेरणा दे सकेंगी। *अपना फ्युचर स्पष्ट नहीं तो दूसरों को भी स्पष्ट बनाने का रास्ता नहीं बता सकेंगी।* अपना फ्युचर स्पष्ट है? महाराजा या महारानी- जो भी बने, लेकिन उससे पहले अपना भविष्य फ़रिश्तेपन का, कर्मातीत अवस्था का- वह सामने स्पष्ट आता है? ऐसा अनुभव होता है कि मैं हर कल्प में फ़रिश्ते स्वरूप में ये पार्ट बजा चुकी हूँ और अभी बजाना है? वो झलक सामने आती है? जैसे दर्पण में अपने स्वरूप की झलक देखते हो ऐसे नॉलेज के दर्पण में अपने पुरुषार्थ से फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई देती है? *जब तक फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई नहीं देगी तब तक भविष्य भी स्पष्ट नहीं होगा।* यह संकल्प आता ही रहेगा कि शायद मैं ये बनूँ या वो बनूँ? लेकिन फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई देगी तो वह भी स्पष्ट दिखाई देगी। तो वह दिखाई देता है या अभी घूंघट में है? जैसे चित्र का अनावरण कराते हो तो अपने फ़रिश्ते स्वरूप का अनावरण कब करेंगे? आपे ही करेंगे या चीफ़ गेस्ट को बुलायेंगे? *यह पुरुषार्थ की कमज़ोरी का पद हटाओ तो स्पष्ट फ़रिश्ता रूप हो जायेगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- मनसा सेवा को नेचुरल बनाना"*

➳ _ ➳ *प्रेम के सागर से बिछुडी मैं स्नेह की एक नन्हीं सी बूँद... स्वार्थ के इस सूखे और कंटीले रेगिस्तान में अपने वजूद को बचानें की कोशिशों में जिस राह चली, वो राहें ही मेरे लिए लिए दलदली होती चली*... प्यार के नाम पर स्वार्थ को पाया और स्वार्थ ही अपनाया... मगर अब लौट चली इन राहों से, जब निस्वार्थ प्यार का तोहफा लेकर वो मेरे प्रेम सागर मेरे दर पर आया... *कल्प कल्प का स्नेह बरसाता वो प्रेम का सागर बैठा है मेरे सामने... और चातक के समान प्यासी मैं आत्मा उस स्नेह की बूँद-बूँद को निरन्तर पिये जा रही हूँ*...

❊ *नयनों से अविरल स्नेह बरसाते स्नेह के सागर बाप मुझ लवलीन आत्मा से बोलें:-"स्नेह सरिता मेरी मीठी बच्ची... जन्म-जन्म की पुकार का प्रत्यक्ष फल ये परमात्म प्यार अब आपने पाया है*... ब्राह्मण जीवन के आधार परमात्म प्यार से तीनो मंजिलों को पार किया... *इस प्रेम में डूबकर क्या देहभान की विस्मृति हुई है? सर्वसबंधो का रस एक बाप में पाया है? और दुनियावी आकर्षणों से छुटकारा पाया... ?*"

➳ _ ➳ *निस्वार्थ प्रेम से भरपूर हो कर दैहिक सम्बन्धों के मोहपाश से मुक्त मैं आत्मा रूहानी स्नेह सागर से बोली:-" मीठे बाबा... आपके अनोखे स्नेह ने सब कुछ सहज ही भूलाया है*... त्याग करना नही पडा... स्वतः ही त्याग कराया है, चत्तियाँ लगी ये अन्तिम जन्म की जर्जर काया, क्या मोल रह गया इसका... बदले में में इसके जब ये चमचमाता फरिश्ता रूप पाया... *सबंध संस्कार दैवी हो रहे... जीवन में दिव्यता को पाया...*"

❊ *ईश्वरीय मर्यादाओं का कंगन बाँध कर हर बंधन से छुडाने वाले मुक्तिदाता बाप मुझ आत्मा से बोले:-*" सर्व सम्बन्धों का सुख मुझ बाप से पाने वाली मेरी मीठी बच्ची... निस्वार्थ प्रेम के लिए तरसती संसार की आत्माओं को भी अब *परमात्म स्नेह का अनुभव कराओं*... सदा ही स्नेह माँगने वालो की कतार में खडे इन स्नेह के प्यासों पर परमात्म स्नेह का मीठा झरना बन

बरस जाओं... *दैहिक संबन्धों में बूँद बूँद स्नेह तलाशते इन प्यासों को परमात्म संबन्धों का अनुभव कराओं...*"

➳ _ ➳ *एक बाप दूसरा न कोई इस स्मृति से सब कुछ विस्मृत करने वाली मैं आत्मा दिलाराम बाप से बोली:-"मीठे बाबा... आपकी स्मृति से सर्व समर्थियाँ पायी है मैने*... स्नेह सागर को स्वयं में समाँकर अब उसी के रूप में ढलती जा रही हूँ... *परमात्म स्नेह का ये झरना मेरे स्वरूप से बेहद में बरस रहा है... प्रकृति भी परमात्म प्रेम से भरपूर हो गयी है... इस कल्प वृक्ष का तना भी भरपूर हुआ, पत्ता पत्ता प्रभु प्रेम से हरष रहा है...*"

❇ *अव्यक्त रूप में बेहद के सेवाधारी विश्व कल्याणी बाप मुझ आत्मा से बोलें:- "समर्थ संकल्पों के द्वारा व्यर्थ का खाता समाप्त करने वाली मेरी होली हंस बच्ची!... अब ये प्यार शान्ति सुख की किरणें बेहद में फैलाओं*... अपने अन्तिम स्थिति के अन्तःवाहक स्वरूप से अब सबको उडती कला का अनुभव कराओं... *नाजुक समय की नाजुकता को पहचानों और एक एक सेकेन्ड का अभ्यास बढाओं... अपने शक्ति स्वरूप से शक्तिमान का दीदार कराओं...*"

➳ _ ➳ *फालो फादर कर मनसा सेवा से कमजोरों में बल भरने वाली मैं आत्मा स्नेह सागर बापदादा से बोली:-*" मीठे बाबा... आपके निस्वार्थ प्रेम ने मँगतों से देने वालों की कतार में खडा किया है... रोम रोम आपके स्नेह में डूबा है, *जो निस्वार्थ स्नेह आपसे पाया है अब औरों पर लुटा रही हूँ... इस असीम स्नेह का कण कण मैं आप समान मनसा सेवा से चुका रही हूँ*... स्नेह के अविरल झरने अब दोनो ओर से ही झर झर बह रहे है,.. और *मैं आत्मा इस बहते स्नेह के दरिया में फिर से डूबी जा रही हूँ*...

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- हर आत्मा के प्रति सदैव शुभ भावना, शुभ कामना रखना*"

➳ _ ➳ जैसे ही मैं अपने मन बुद्धि को एकाग्र कर, बाबा की याद में स्थिर करती हूँ ऐसा अनुभव होता है जैसे वतन में बैठे बापदादा मुझे सहज ही अपनी और खींच रहें हैं और देखते ही देखते अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर के साथ मैं आत्मा अपनी साकारी देह से बाहर आ जाती हूँ और अपनी लाइट माइट चारों और फैलाती हुई अपने फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो कर ऊपर की और उड़ने लगती हूँ। *बापदादा की लाइट माइट मुझ फ़रिश्ते को अपनी और खींचते हुए सेकेंड में मुझे साकारी दुनिया से दूर आकाश के पार, उससे भी परें फरिश्तो की एक अद्भुत सुंदर दुनिया में ले आती है*।

➳ _ ➳ सफेद प्रकाश की यह दुनिया जहाँ हर आत्मा अपने सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप को धारण कर फरिश्तो की इस अति सुंदर नगरी में विचरण करते हुए, इस दुनिया के दिव्य अलौकिक नज़ारों का आनन्द ले रही है। *अपने सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप में यहां उपस्थित वरिष्ठ दादियों, मम्मा, बाबा और वरिष्ठ भाई, बहनो को मैं फरिश्ता देख रहा हूँ। सामने अव्यक्त बापदादा अपनी अनन्त लाइट माइट चारों और फैलाते हुए विशेष रूप से शोभायेमान हो रहें हैं*। बाबा की नजर अब मुझ फ़रिश्ते के ऊपर है। बाबा अपनी बाहों को फैलाये मुझे अपने पास बुलाते हैं। मैं फ़रिश्ता अब बाबा के पास पहुंचता हूँ। बाबा अपनी बाहों में मुझे समा लेते हैं और अपने असीम स्नेह से मुझे भरपूर कर देते हैं।

➳ _ ➳ अपने पास बिठाकर अब बाबा मुस्कारते हुए मेरा हाथ अपने हाथ मे लेते हैं और अपनी सर्वशक्तियाँ मुझ में समाहित करने लगते हैं। *मैं स्पष्ट अनुभव कर रहा हूँ एक तेज करंट के रूप में बाबा की सर्वशक्तियाँ मेरे अंदर समाहित हो रही है। एक असीम ऊर्जा का संचार मेरे भीतर हो रहा है और मैं स्वयं को बहुत ही शक्तिशाली अनुभव कर रहा हूँ*। अपनी समस्त शक्तियों से मुझे शक्तिशाली बना कर अब बाबा अपने हाथ मे एक बहुत सुंदर गिफ्ट ले कर मेरे हाथ पर रख देते हैं और मुझ से कहते हैं:- *"मेरे बच्चे, यह शुभभावना, शुभकामना की गिफ्ट है जिसे आपको अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को देना है"*

➳ _ ➳ इस अति सुंदर अनूठे गिफ्ट का बॉक्स मेरे हाथ मे देकर बाबा अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख देते हैं। *शभभावना, शभकामना की गिफ्ट

का स्टॉक सदा भरपूर रहे इसके लिए बाबा अपने वरदानी हस्तों को ऊपर उठाकर सर्व खजानों को मुझ पर लुटाते हुए अपने सर्वगुणों, सर्वशक्तियों और सर्वखजानो से मुझे सम्पन्न कर देते हैं*। मैं देख रहा हूँ बापदादा के साथ - साथ वहां उपस्थित एडवांस पार्टी की आत्मायें, मम्मा, वरिष्ठ दादियां और मेरे सभी वरिष्ठ भाई बहन भी अपनी समस्त ब्लेसिंग की गिफ्ट मुझे दे रहें हैं। *उन सभी की दुआयों से मैं स्वयं में एक्स्ट्रा एनर्जी का अनुभव कर रहा हैं ये दुआएँ मेरे लिए लिफ्ट का काम कर रही हैं*।

➳ _ ➳ बापदादा से शुभभावना, शुभकामना के गोल्डन गिफ्ट का स्टॉक स्वयं में भर कर और अपने अलौकिक ब्राह्मण परिवार की दुआयें ले कर अब मैं फ़रिश्ता इस अलौकिक गिफ्ट को सबको देने के लिए वापिस साकारी दुनिया में आ जाता हूँ। *अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित होकर अब मैं अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को यह शुभभावना, शुभकामना की गिफ्ट दे रही हूँ*। किसी के भी अवगुणों को ना देखते हुए केवल विशेषताओ और गुणों की ही लेन - देन मैं अब कर रही हूँ। *चाहे कोई कैसी भी भावना या कामना से मेरे पास आता है किंतु मैं अपने शुभभावना और शुभकामना के स्टॉक को भरपूर रख सबको शुभभावना से देखते हुए शुभभावना, शुभकामना की अलौकिक गिफ्ट ही सबको दे रही हूँ*।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं कम समय मे सम्पूर्णता की श्रेष्ठ मंजिल को प्राप्त करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं डबल लाइट आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा दु:खधाम से सदा किनारा कर लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा दु:ख की लहर को सदैव दूर से ही भगा देती हूँ ।*
✺ *मैं सु:ख स्वरूप आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अभी समय अनुसार जैसे कहाँ-कहाँ पानी के प्यासी हैं, ऐसे वर्तमान समय शुद्ध, शान्तिमय, सुखमय वायब्रेशन के प्यासी हैं। *फरिश्ते रूप से ही वायब्रेशन फैला सकते हो।* *फरिश्ता अर्थात् सदा ऊँच स्थिति में रहने वाले।* फरिश्ता अर्थात् *पुराने संसार और पुराने संस्कार से नाता नहीं।* अभी *संसार परिवर्तन आप सबके संस्कार परिवर्तन के लिए रुका हुआ है।* इस नये वर्ष में लक्ष्य रखो - संस्कार परिवर्तन, स्वयं का भी और सहयोग द्वारा औरों का भी। *कोई कमजोर है तो सहयोग दो, न वर्णन करो, न वातावरण बनाओ। सहयोग दो।*

➳ _ ➳ इस वर्ष की टापिक 'संस्कार परिवर्तन'। फरिश्ता संस्कार, *ब्रह्मा बाप समान संस्कार।* तो सहज पुरुषार्थ है या मुश्किल है? थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? कभी भी कोई बात मुश्किल होती नहीं है, अपनी *कमजोरी मुश्किल बनाती है।* इसीलिए बापदादा कहते हैं 'हे *मास्टरसर्वशक्तिवान बच्चे,* अभी शक्तियों का वायमण्डल फैलाओ'। अभी *वायमण्डल को आपकी बहत-बहत-बहत

आवश्यकता है।* जैसे आजकल विश्व में पोल्यूशन की प्रॉब्लम है, ऐसे विश्व में *एक घड़ी मन में शान्ति सुख के वायुमण्डल की आवश्यकता है* *क्योंकि मन का पोल्यूशन बहुत है, हवा की पोल्यूशन से भी ज्यादा है। अच्छा।*

✺ *ड्रिल :- "संस्कार परिवर्तन से मन का पोल्यूशन हटाकर, शक्तियों का वायुमण्डल फैलाना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाबा के प्यार की वर्सा के नीचें उनकीं याद में खोई हुई हूँ... बाबा बड़े प्यार से ज्ञान स्नान करा रहे हैं... *चारों ओर प्रकृति भी मुझ आत्मा को देख हर्षित हो रही हैं...* मैं आत्मा प्रकृति और सर्व आत्माओ को शुद्ध, शांतिमय और सुखमय वायब्रेशन दे रही हूँ... *बाबा की याद से मुझ आत्मा से शक्तिशाली वायब्रेशन निकल रहे हैं...* जिससे सर्व आत्माओं को सुख की अनुभूति हो रही हैं... सर्व आत्माओं को लग रहा हैं कि कोई उन्हें शांति की अनुभूति करा रहा है... *उनके विचलित और अशांत मन शांत हो रहे हैं... मैं आत्मा फ़रिश्ता बन सारे ग्लोब में सुख, शांति का वायब्रेशन दे रही हूँ...* जिससे सारे विश्व में शांति और सुख की किरणें फ़ैल रही हैं... मै आत्मा देख रही हूँ... *कि प्रकृति के पाचों तत्व शांत हो गये हैं...*

➳ _ ➳ फ़रिश्ता पन की स्थिति से मै आत्मा अपने ऊचें ते ऊचें स्वमान में अपने ऊचें ते ऊचें *बाप की याद से सर्व आत्माओं को सुख और शांति का वायब्रेशन दे रही हूँ...* और ना ही *इस पुरानीं दुनियाँ से कोई रिश्ता हैं...* मैं फ़रिश्ता सारे विश्व की सेवा में बिजी हूँ... *मुझ आत्मा के सारे पुराने और कड़े संस्कार परिवर्तित हो चुके है...* और मुझ आत्मा में दैवीय संस्कार आ चुके हैं... *स्व के सहयोग और सर्व के सहयोग से मुझ आत्मा के सारे पुरानें संस्कार ख़त्म हो चुकें हैं...*

➳ _ ➳ *मै आत्मा मास्टर सर्व शक्तिमान की स्टेज से सर्व कमज़ोर आत्माओं को सकाश दे रही हूँ...* और उन्हें सहयोग की शक्ति दे रही हूँ... *मै आत्मा किसी और आत्माओं की कमी कमज़ोरी ना देख, ना ही उनका वर्णन कर उन आत्माओं को सहयोग दे रही हूँ...* और उन्हें आगे बढ़ा रही हूँ...

➳ _ ➳ बाबा ने मुझ आत्मा को संस्कार परिवर्तन का वरदान दिया हैं... *बाबा के साथ और सर्व शक्तियों से मैं आत्मा अपने सारे पुरानें संस्कार परिवर्तन कर चुकी हूँ... जैसे ब्रह्मा बाप ने सेकंड में अपने सारे संस्कार परिवर्तित कर के फ़रिश्ता बन गए...* वैसे मै आत्मा भी अपने सारे संस्कार परिवर्तन कर चुकी हूँ... *कोई भी बात अब मुझ आत्मा के लिए मुश्किल नहीं हैं...* और ना ही कोई कमज़ोरी मुझ आत्मा में हैं... *मै आत्मा सर्व कमज़ोरियो को समाप्त कर आगे बढ़ चुकी हूँ...*

➳ _ ➳ बाबा की दी हुई शक्तियों से *चारों ओर दिव्य वायुमंडल बन गया हैं... जिससे सर्व आत्माओ को सुख, शांति का अनुभव हो रहा है...* चारों तरफ़ दिव्य और पवित्र वायुमंडल बन चुका हैं... *सारी प्रकृति और सर्व आत्माओं को सुख और शांति की अनुभूति हो रही हैं...* सारे विश्व में शांति का वायुमंडल बन गया हैं... कितना सुखद अनुभव हैं... कि *चारों ओर शांति का वायुमंडल हैं... सबके मन से अशुद्ध संकल्प, विकल्प सब ख़त्म हो चुकें हैं...* और सर्व का सर्व शक्तियों से भर चूका हैं... *मुझ फ़रिश्ता आत्मा के साथ सारा विश्व बाबा का दिल से धन्यवाद कर रहे हैं... कि पाना था जो वो पा लिया...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔